HISTORY, B.A. HONS II - PAPER II

CAUSES OF NAPOLEAN'S DOWNFALL (नेपोलियन के पतन के कारण)

नेपोलियन न केवल यूरोप अपितु विश्व-इतिहास का एक महान् व्यक्तित्व था। यूरोप के राजनीतिक पटल पर अचानक एवं तेजी से उसका पदार्पण हुआ, किन्तु उतनी ही शीघ्रता से वह विलुप्त भी हो गया। 1799 ई० से 1814 ई० तक वह यूरोप पर छाया रहा तथा अपने कार्यों, विजयों एवं व्यक्तित्व से न केवल फ्रांस अपितु सम्पूर्ण विश्व को उसने प्रभावित किया। एक साधारण परिवार में जन्मा, एक सिपाही के रूप में अपना जीवन प्रारम्भ करने वाला नेपोलियन असाधारण योग्यता एवं प्रतिभा का स्वामी था जिसके द्वारा ही वह फ्रांस के सम्राट के पद तक जा पहुँचा। 1807 ई. में वह अपने उत्कर्ष की चरम सीमा पर था। ग्रांट एण्ड टेम्परले ने लिखा है, "1807 ई. में नेपोलियन अपने शक्ति की चरम सीमा पर था। यदि वह उसी वर्ष मर जाता तो उसका जीवन यूरोप के सैन्य इतिहास एवं सम्भवतः विश्व के इतिहास में सबसे चमत्कारपूर्ण बन जाता।" उल्लेखनीय है कि 1807 ई० से पहले के 7 वर्ष में नेपोलियन ने जिस तेजी के साथ उन्नति की थी, 1807 ई. के बाद उतनी ही तीव्रता से वह पतन की ओर अग्रसर हुआ।

इतिहास साक्षी है कि प्रत्येक साम्राज्य अथवा सम्राट का चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो एक निश्चित अवधि के पश्चात् पतन होने लगता है। नेपोलियन भी इस ऐतिहासिक सत्य का अपवाद नहीं था। 'असम्भव' शब्द को न मानने वाला नेपोलियन भी अन्ततोगत्वा पतन के गर्त में समा गया। नेपोलियन के पतन में अनेक प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष कारणों ने सहयोग दिया, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित थे:-

1. **एक व्यक्ति की योग्यता पर आधारित राज्य (Empire based on only one person)**:- नेपोलियन अपनी योग्यता के आधार पर शासक बना था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि नेपोलियन प्रतिभा का स्वामी था, किन्तु फिर भी राज्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए परामर्शदाताओं की आवश्यकता होती है। नेपोलियन किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप को पसन्द नहीं करता था और न ही किसी से परामर्श लेता था यहाँ तक तालीरॉ, फूशे जैसे योग्य व्यक्तियों से परामर्श लेना भी उसने छोड़ दिया। नेपोलियन यह भूल गया था कि वह ईश्वर नहीं वरन् एक मनुष्य है और मनुष्य की क्षमताएँ सीमित होती हैं; चाहे वह कितना भी योग्य क्यों न हो।

2. **असीमित महत्त्वाकांक्षी होना (Over ambitious)**:- उन्नति करने के लिए मनुष्य का महत्त्वाकांक्षी होना आवश्यक है, किन्तु जब महत्त्वाकांक्षाएँ मनुष्य की क्षमता से अधिक होने लगती हैं तो उसका पतन होने लगता है। नेपोलियन के साथ भी यही हुआ। नेपोलियन के पतन के लिए अन्य बाहरी कारणों से अधिक उसकी अपनी

→

महत्वाकांक्षाएं अधिक उत्तरदायी थीं। नेपोलियन अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में किसी भी प्राकृतिक बाधा को स्वीकार करने के लिए तैयार न था। वह एक साधारण सिपाही से सम्राट बन गया था, किन्तु फिर भी उसकी अभिलाषाएं समाप्त न हुई। फ्रांस का सम्राट बनने के पश्चात् वह विश्व विजय के स्वप्न देखने लगा। यही उसके पतन का कारण बन गया क्योंकि यूरोप के राष्ट्रों ने उसके विरुद्ध संगठन कर उसके पतन के बीज बो दिए।

3. नेपोलियन का खराब स्वास्थ्य (Ill health of Napolean) :- बढ़ती आयु के साथ-साथ नेपोलियन का स्वास्थ्य भी खराब होने लगा था। यद्यपि रोज इत्यादि कुछ इतिहासकारों का मानना था कि वाटरलू के युद्ध के समय नेपोलियन पूर्णतया स्वस्थ था। केवल उसकी निर्णय शक्ति कमजोर हो गई थी, किन्तु इस बात को स्वीकार करना कठिन है। रूस के अभियान के पश्चात् उसका स्वास्थ्य गिरा था, इसके अतिरिक्त यदि रोज की बात मानें तो यदि सम्राट की निर्णय शक्ति ही कमजोर हो जायेगी तो उसका पतन होना स्वाभाविक ही है। डॉ० स्लोन ने लिखा है, "नेपोलियन के पतन के समस्त कारण एक ही शब्द 'थकान' में निहित हैं।" निःसंदेह निरंतर युद्धों में रत रहने से नेपोलियन थक चुका होगा, जिससे उसकी कार्यक्षमता एवं युद्धक्षमता पर असर हुआ।

4. सैनिकवादी नीति (Policy of Militarism) :- नेपोलियन ने फ्रांस की राष्ट्रीय भावनाओं को सैन्यवाद में परिवर्तित कर दिया। नेपोलियन यह भूल गया कि सैन्यवादी नीति किसी एक सीमित उद्देश्य की पूर्ति के लिए उचित हो सकती है किन्तु प्रत्येक अवसर पर सेना का प्रयोग कभी उचित नहीं होता और न ही सैन्य शक्ति के द्वारा राज्य को अधिक दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है। नेपोलियन को सम्राट पद प्राप्त कर लेने के पश्चात् अपना देश शान्ति के सिद्धांतों पर आधारित करना चाहिये था, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया, जिसके कारण वह पतन की ओर अग्रसर हुआ।

5. पोप के साथ दुर्व्यवहार (Misbehaviour with Pope) :- प्रारम्भ में नेपोलियन के पोप के साथ अच्छे सम्बंध थे, किन्तु महाद्वीपीय व्यवस्था के प्रश्न पर पोप एवं नेपोलियन के सम्बंधों में कटुता आ गई। नेपोलियन ने अपनी शक्ति के मद में पोप को बन्दी बना लिया। नेपोलियन द्वारा पोप को बन्दी बनाना उसकी भारी भूल थी। रोज ने लिखा है, "पोप के साथ दुर्व्यवहार करना नेपोलियन की भयंकर भूल थी।" पोप को बन्दी बनाये जाने से सम्पूर्ण कैथोलिक वर्ग नेपोलियन के विरुद्ध हो गया जिसका भारी मूल्य नेपोलियन को चुकाना पड़ा।

→

6. महाद्वीपीय व्यवस्था (Continental System) :- नेपोलियन ने इंगलैण्ड को परास्त करने के लिए आर्थिक युद्ध का सहारा लिया। इसी के अन्तर्गत नेपोलियन ने महाद्वीपीय व्यवस्था लागू करने की घोषणा की। नेपोलियन इंगलैण्ड को व्यापारियों का देश कहता था। उसका विचार था कि यदि इंगलैण्ड के व्यापार को बंद कर दिया जाये तो इंगलैण्ड आर्थिक रूप से टूट जायेगा तथा फ्रांस के समक्ष घुटने टेक देगा। नेपोलियन की योजना पूर्णतया असफल हो गई। इंगलैण्ड यूरोप के प्रत्येक देश को आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति करता था। अतः इस व्यवस्था से प्रत्येक देश में आवश्यक वस्तुओं की कमी हो गयी तथा अन्य देशों ने इस व्यवस्था का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। जब नेपोलियन ने अन्य देशों पर दबाव डाला तो उनके पारस्परिक संबंध खराब होने लगे, इससे नेपोलियन को अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा। महाद्वीपीय व्यवस्था नेपोलियन के पतन का एक प्रमुख कारण थी। टेलर ने लिखा है, "अन्ततः इस नीति (महाद्वीपीय व्यवस्था) ने उसे अनिवार्य रूप से आक्रामक युद्धों की नीति में उलझा दिया..... जिसके परिणाम विनाशकारी हुए और उसे भारी कीमत चुकानी पड़ी।"

.....जारी है, इसके अगले पेज।

19.8.2020